❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को

मिलन पर्व – होली की

हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 40, अंक 19 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 6 मार्च, 2017 से रविवार 12 मार्च, 2017
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बोध दिवस (शिवरात्रि) पर विशाल ऋषि मेला सम्पन्न

यज्ञ के विज्ञान एवं शोध परिणामों पर हुई विशेष चर्चा

यज्ञ के विज्ञान को हर व्यक्ति तक पहुंचाना आर्यसमाज का दायित्व – महाशय धर्मपाल

यज्ञ के विज्ञान पर शोध परिणाम उत्साहजनक : परीक्षण कार्य जारी रखेंगे – धर्मपाल आर्य

गाय के घी, आम की समिधा और शुद्ध सामग्री की उचित मात्रा द्वारा किये गये यज्ञ से गन्दे, प्रदूषण वाले जीवाणु शत प्रतिशत नष्ट हो जाते हैं – *स्वामी कृष्णानन्द*

वेदमन्त्रों द्वारा यजकुण्ड में अग्नि प्रज्ज्वलित करने से बहुत अच्छे सकारात्मक परिणाम प्राप्त होते हैं व इस का प्रभाव भी सप्ताह भर रहता है –*डॉ ममता सक्सेना, वैज्ञानिक कृषि विभाग*

यज्ञ के विज्ञान के प्रचार से ही होगा यज्ञ का प्रसार– सुरेन्द्र कुमार रैली

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्त्वावधान में 24 फरवरी 2017 को महर्षि दयानन्द सरस्वती बोधोत्सव के उपलक्ष्य में ऋषि मेले का आयोजन रामलीला मैदान दिल्ली में किया गया। इस अवसर पर डॉ. सत्यकाम वेदालंकार जी के निर्देशन में यज्ञ आरम्भ हुआ जिसके यज्ञमान, श्रीमती उषा व श्री सुभाष चान्दना, श्रीमती आरती व पुत्र श्री अनन्त खुराना, श्रीमती कल्पना व श्री देवकी नन्दन गुप्ता तथा श्रीमती नीलम व श्री योगेश आर्य ने बड़ी श्रद्धा व भक्ति भाव द्वारा वेदमन्त्रों से बोधोत्सव के पावन अवसर पर प्रभु का गुणगान करते हुये महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के ऋण से उऋण होने का प्रयास किया। उपस्थित आर्य बन्धुओं का आशीर्वाद और शुभकामनायें प्रदान कीं। तदुपरान्त श्री शिव कुमार मदान व श्री अजय तनेजा, प्रधान व मन्त्री आर्यसमाज सी 3 जनकपुरी तथा श्री सुरेश टडंन, प्रधान आर्यसमाज न्यू मोतीनगर, ने ध्वजगान व ''ओ३म् का झंडा ऊँचा रहे'' के जयघोष के साथ ध्वजारोहण किया। श्री अनिल तनेजा जी, कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ने खेल प्रतियोगिताओं का उद्घाटन किया जिसका संयोजन आचार्य खुशीराम व श्री कृपाल सिंह जी कर रहे थे। इन खेल प्रतियोगिताओं में आर्ष विद्या सभा के अन्तर्गत आने वाले विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों ने भाग लिया तथा दूसरी तरफ मंच से श्री बलराम आर्य व अमित आर्य ने प्रेरणा पद प्रभु भक्ति से युक्त भजनों द्वारा दूर-दूर से आये आर्यजनों का मन मोह लिया।

आर्य वीर मॉडल स्कूल, बादली के बच्चों ने यज्ञ विषय पर नाटिका की प्रस्तुति दी, तदुपराप्त श्री रवि चड्डा जी की अध्यक्षता में 'यज्ञ एक विज्ञान' विषय पर गोष्ठी हुई जिसका संयोजन श्री ईश नारंग ने किया। यज्ञ अनुसंधानकर्ता स्वामी कृष्णानन्द जी ने यज्ञ पर किये शोधों से प्राप्त हुए ज्ञान को बाँटते हुए बताया कि यज्ञ यदि गाय के घी, आम की समिधा और शुद्ध सामग्री की उचित मात्रा द्वारा किया जाता है तो गन्दे जीवाणु शत प्रतिशत नष्ट हो जाते हैं, फंगस, एम.डी.आर व विभिन्न रोगाणु में कमी आती है या समाप्ति हो जाते हैं तथा रक्त शोधक-जीवाणु, वाइरस, विटामिन, सटेम सेल आदि में लाभकारी बढ़ोतरी होती है, पर्यावरण शुद्धि होती है और उस स्थल पर सप्ताह भर विशेष प्रभाव भी रहता है।

डा. ममता सक्सेना कृषि मंत्रालय के

– शेष पृष्ठ 5 एवं 8 पर

चलो केरल! चलो केरल!! केरल चलो!!!

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत दिल्ली सभा के सहयोग से

महाशय धर्मपाल वेद रिसर्च फाउण्डेशन, कोझिकोड (केरल) के

नवनिर्मित परिसर का उद्घाटन एवं दक्षिण भारतीय वैदिक सम्मेलन

1-2 अप्रैल, 2017 (शनिवार एवं रविवार)

सान्निध्य
आचार्य एम. आर. राजेश
अध्यक्ष, कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन

उद्घाटन
महाशय धर्मपाल
चेयरमैन, एम.डी.एच

अध्यक्षता
श्री सुरेशचन्द्र आर्य
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

समारोह में भाग लेने के इच्छुक आर्यजन अभी से अपनी रेल/हवाई टिकटें अभी से आरक्षित करवा लेवें। कोझिकोड (कालीकट) केरल के लिए हवाई सेवाएं एवं रेल सेवा - राजधानी एवं अन्य रेलगाड़ियां उपलब्ध हैं। साधारण आवास - धर्मशाला/गैस्ट हाउस सुविधा एवं भोजन नि:शुल्क है। एसी 2 स्टार होटल लगभग 1000/- रुपये प्रति व्यक्ति प्रतिदिन के हिसाब से मिलते हैं। एक कमरे में दो व्यक्तियों को ठहराया जाएगा। कृपया अपनी टिकट की प्रति श्री सन्दीप आर्य जी को ईमेल- daps.sandeeparya@gmail.com या व्हाट्एप्प द्वारा 9650183339 पर तत्काल भेज देवें, ताकि उचित व्यवस्था की जा सके। यात्रा सम्बन्धी और अधिक जानकारी के लिए श्री एस. पी. सिंह जी (मो. 9540040324) अथवा श्री वीरेन्द्र सरदाना जी (मो. 9911140756, 9540944958) से सम्पर्क करें।

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में भाग लेकर समारोह को सफल बनाएं एवं समारोह के साक्षी बनें

निवेदक

प्रकाश आर्य	डॉ. राधाकृष्ण वर्मा	धर्मपाल आर्य	विनय आर्य	विवेक शिनॉय
(मन्त्री)	(उप प्रधान)	(प्रधान)	(महामन्त्री)	(संयोजक)
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा		दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा		कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन, कालीकट

वेद-स्वाध्याय

परमात्मा महान्-से-महान् और सूक्ष्म-से-सूक्ष्म

उतेयं भूमिर्वरुणस्य राजज्ञः उतासौ द्यौर्बृहती दूरेअन्ता।
उतो समुद्रौ वरुणस्य कुक्षी उतास्मिन्नल्प उदके निलीनः।। अथर्व. 4/16/3
ऋषिः ब्रह्मा।। देवता - वरुणः।। छन्दः त्रिष्टुप्।।

शब्दार्थ- इयं भूमिः= यह भूमि **उत**=भी **वरुणस्य राज्ञः**= वरुण राजा की है तथा **असौ**=वह **बृहती**=बड़ा तथा दूरे **अन्ता**=दूर और समीपतावाला **द्यौः**=द्युलोक **उत**=भी वरुण राजा का है। **उत उ**= तथा **समुद्रौ**=ये दोनों समुद्र **वरुणस्य**=वरुणदेव की **कुक्षी**=कोखें हैं **उत**=और साथ ही वह **अस्मिन्**=इस **अल्पे उदके**=पानी की क्षुद्र बूँद में भी **निलीनः**= छिपा हुआ है, व्याप्त है।

विनय - इस सब संसार का एकमात्र राजा वरुण है, पापनिवारक परम श्रेष्ठ परमेश्वर है। उसके सिवा अन्य कोई इस विश्व में प्रभु (सर्वसमर्थ शासक) नहीं है। अन्य किसी दूसरे का आधिपत्य, शासन इस संसार पर नहीं चल रहा है। उसके सिवा और कोई संसार पर वास्तविक शासन कर भी नहीं सकता, क्योंकि वही ऐसा अद्भुत परिपूर्ण है कि वह महान् से भी महान् होता हुआ सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है। हमारी बुद्धि चाहे ऐसे अलखस्वरूप को न मान सके, परन्तु वरुण ईश्वर का स्वरूप ऐसा ही है। वह महान् तो इतना है कि यह विस्तृत विशाल भूमि ही नहीं, किन्तु इससे भी लाखों गुना बड़ा द्युलोक भी उस वरुण राजा के हाथ में है। यह बड़ा भारी स्थूल दृश्य जगत् ही नहीं, किन्तु इसकी अपेक्षा बहुत बड़ा जो प्रकाशमय (मनोमय, विज्ञानमय आदि सूक्ष्म) संसार है, वह भी सर्वथा वरुण राजा के आधिपत्य में ही है। इसभूलोक को तो हम कुछ जानते भी हैं, परन्तु वरुण राजा के अनन्त साम्राज्य के उस प्रकाशमय बड़े भारी विभाग को हम अभी नाम-मात्र ही समझते हैं और वह द्युलोक भी इतना विलक्षण है कि वह 'दूरेअन्ता' है, वह दूर भी है और समीप भी है। आधिभौतिक रूप से वह दूर होता हुआ भी आध्यात्मिक रूप से वही हमारे अन्दर विद्यमान है। आध्यात्मिक रूप से 'द्यौ' का अधिष्ठाता होता हुआ वह वरुण हमारे अन्दर भी सूक्ष्म-से-सूक्ष्म होकर घुसा हुआ है, अर्थात् जहाँ वह वरुण गहराई में अनन्त है वहाँ वह विस्तार में भी अनन्त है। एवं, संसार के ये दो प्रसिद्ध बड़े भारी समुद्र-एक पार्थिव समुद्र, भूमि का तीन-पंचामांश भाग जलराशिमय पारावार तथा दूसराइससे भी बहुत बड़ा अन्तरिक्ष समुद्र, जलवाष्पमय पारावार- ये दोनों सतुद्र उस वरुण की कोख के समान हैं, परन्तु वरुणदेव आकार में जहाँ इतने विशाल हैं, इतने विराट् शरीरवाले हैं कि ये बड़े जल-समुद्र उनकी कोख में रहने वाले तनिक-से पानी के समान हैं, तो साथ ही वे इतने सूक्ष्म भी हैं कि इतने विराट् शरीरधारी होकर भी इसजल के एक कण में (एक बिन्दु में) भी छिपे पड़े हैं, समाये हुएहैं, व्याप्त हैं। वरुण राजा ऐसे हैं। अहो! वरुण प्रभु के इस महान्-से-महान् होने के साथ ही सूक्ष्ममातिसूक्ष्म होने के स्वरूप की भी यदि हम उपासना करें, विस्तार के साथ गराई में भी बढ़े हुए होने का हम यत्न करें, तो इस साधन से भी हम इतने शक्तिशाली हो जाएँ और इतने सम हो जाएँ िहमारे सब पाप स्वयमेव निवारण हो जाएँ, हमसे पापाचरण होना अस्वाभाविक हो जाए।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

दूसरों के बच्चे आतंकी क्यों?

अपने बच्चों के हाथ में किताब बाकि बच्चों के हाथ में हथियार! अलगावादी के बच्चे डॉक्टर दूसरों के बच्चे आतंकी क्यों? अपने बच्चों से कहते है महफूज रहो, दूसरों के बच्चों को देश के खिलाफ लड़ाते हो क्यों? यह सवाल पिछले दिनों कश्मीर हिंसा के दौरान अलगाववादी नेताओं की नीयत पर सवाल उठाते हुए पूर्व आतंकी हाशिम कुरैशी के बेटे जुनेद कुरैशी ने वीडियो सन्देश के जरिए कश्मीरी अलगावादी नेताओं से पूछे थे। आतंकी बुरहान वानी की मौत के बाद जब कश्मीर हिंसा के दौर से गुजर रहा था और पाकिस्तान समर्थक अलगाववादी नेता सैय्यद अली शाह गिलानी द्वारा हर रोज बुलाए जा रहे कश्मीर बंद के आह्वान के कारण कई कश्मीरी युवाओं को अपनी जान गवानी पड़ी थी, उसी दौरान गिलानी के पोते को भाजपा-पीडीपी गंठबंधन वाली राज्य सरकार में एक आउट-ऑफ-टर्न सरकारी नौकरी दी गयी थी। जिसका खुलासा अब एक अंग्रेजी अखबार ने किया। गिलानी के पोते, अनीस-उल-इस्लाम को सरकारी नौकरी देने के लिए राज्य सरकार की भर्ती नीति के सभी नियमों का उल्लंघन किया गया। इस्लाम को शेर-ए-कश्मीर इंटरनेशनल संवहन कनवेक्शन कॉम्पलेक्स में रिसर्च ऑफिसर के रूप में नियुक्त किया गया जो जम्मू-कश्मीर पर्यटन विभाग की एक सहायक संस्था है। इस नौकरी में सालाना वेतन 12 लाख रुपये का है।

लंदन जाकर बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन में दूसरी मास्टर डिग्री हासिल करने वाले अनीस को राज्य की मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती द्वारा चयन नियमों को ताक पर रखकर यह पद सौंपा गया था। जब हजारों कश्मीरी बच्चे गिलानी द्वारा स्कूल जाने का बायकाट करने के आह्वान के बाद घर बैठे थे तब नईम की बड़ी बेटी गिलानी की पोती ने अपनी स्कूल परीक्षाएं दी थी। ज्ञात हो कि गिलानी की पोतियां एक एयरलाइन कंपनी में क्रू मेंबर के रूप में कार्य करती हैं। शायद यह सब सुनकर उन लाखों कश्मीरी युवाओं को सोचने पर मजबूर कर दे। जो कश्मीरी अलगावादी नेताओं के इशारे पर लोग सडक पर उतर आते हैं। शहर बंद कर देते हैं, पत्थर बरसाते हैं उनके बच्चे और तमाम सुख सुविधा के साथ कुछ के परिवार और बच्चे मलेशिया, कनाडा, ब्रिटेन और अमेरिका है तो कईयों के बच्चे दिल्ली, मुम्बई, और बेंगलूरु में रहकर या तो पढाई कर रहे हैं या ऊँची नौकरी।

कश्मीरी नौजवान जुनैद कुरैशी ने अलगाववादियों से सवाल पूछे थे कि यदि हथियार उठाने जरूरी है तो फिर अलगाववादी अपने बच्चों को बन्दूक क्यों नहीं थमाते? क्यों अपने बच्चों को थोड़ा बड़ा होते ही यह लोग कश्मीर से बाहर भेज देते है? देखा जाये तो जुनैद के सवालों में दम है क्योंकि ऐसा कश्मीर के लगभग हर अलगाववादी ने किया। फिर चाहे वह तहरीक-ए-हुर्रियत के नेता अली शाह गिलानी हों, हिजबुल सरगना सलाहुदीन या फिर दुखतरान-ए-मिल्लत की आसिया आंद्राबी हो। न आज तक इनके बच्चे कभी किसी प्रदर्शन में शामिल हुए न पत्थर उठाते और न ही आतंकी बनते। जब कश्मीर इनकी कलुषित मानसिकता की भट्टी में जलता है तब यह अपने बच्चों को कश्मीर से बाहर भेज देते है या इनके बच्चें विदेशों में आराम फरमा रहे होते हैं।

वर्ष 2008 के दंगों की बात हो या 2010 या 16 की। सेना पर हमला करने वाले कश्मीरी युवा किस तरह इन लोगों के बोद्धिक आतंक की चपेट में आकर अपना जीवन बर्बाद कर डालते हैं। यासीन मलिक कश्मीर के अन्दर इस्लामिक ड्रेस बुर्के आदि की पैरवी करता है लेकिन उनकी पाकिस्तानी पत्नी मुशहाला हुसैन लन्दन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से ग्रेजुएट हैं और वह यूरोपीय परिधान ही पसंद करती है। मुशहाला के पिता एम ए हुसैन पाकिस्तान के जाने माने इक्नोमिस्ट हैं और उनकी माँ पाकिस्तान की पार्टी मुस्लिम लीग की महिला मोर्चा की अध्यक्ष है। इनके बाद दूसरे अलगाव नेता मीर वाइज उमर फारुक का नाम आता है। उमर फारुक की पत्नी शीबा मसदी अमेरिकी मूल की है जो अपनी बेटी के साथ अमेरिका में ही रहती है। फारुक की बहन राबिया फारुक अमेरिका में डॉक्टर है। गिलानी का उत्तराधिकारी माना जा रहा मोहम्मद अशरफ सहराई का बेटा आबिद भी दुबई में कम्प्यूटर इंजीनियर है। एक अन्य हुर्रियत नेता गुलाम मोहम्मद सुमजी इनका बेटा जुगनू दिल्ली रहकर अपनी पढ़ाई कर रहा है उसे छोटी आयु में दिल्ली यह कहकर रिश्तेदारों के पास भेज दिया था कि कश्मीर की फिजा खराब है। क्या हुर्रियत नेता बता सकते है कि कश्मीर की फिजा क्यों और किसके द्वारा खराब है?

दुखतरान-ए-मिल्लत की फरीदा एक महिला अलगाववादी नेता के रूप में प्रख्यात है कश्मीरियों को भड़काने में अग्रणी भूमिका में रहती है लेकिन इनका बेटा रुमा मकबूल साऊथ अफ्रीका में डॉक्टर है हालाँकि 2014 के चुनाव में फरीदा को गिरफ्तार कर लिया गया था। आतंकी और हुर्रियत नेता मसरत आलम जिनकी रिहाई को लेकर भाजपा-पीडीपी गठबंधन में 2015 में रार दिखी थी उनके दोनों बेटे श्रीनगर के एक अच्छे स्कूल में रहकर पढाई कर रहे हैं। हुर्रियत प्रवक्ता एयाज अकबर का बेटा सरवर याकूब पुणे में रहकर मेनेजमेंट की पढाई कर रहा है। जबकि गरीब और अनपढ़ कश्मीरी हाथों में पत्थर लिए इस उम्मीद से डोल रहे हैं कि ये नेता उनकी आजादी की लड़ाई लड़ रहे हैं। यही नहीं यदि इसके बाद शेष भारत के उन मुस्लिम नेताओं पर गौर करे जो हमेशा मुस्लिमों को शिक्षा की मुख्यधारा से हटाकर उनके लिए राजनैतिक स्तर पर मदरसों की मांग करते हैं उन सबके बच्चे भी विदेशों में पढ़ते हैं या फिर भारत में ही ऊँचे पदों पर विराजमान है। हमेशा मुस्लिमों के लिए शरियत या फिर अन्य इस्लामिक कानूनों को थोपने वाले ओवेशी ने खुद विदेश से शिक्षा हासिल की है। क्या आज गरीब मुस्लिम इन पैंतरों को नहीं समझ पा रहा है कि किस तरह यह लोग मजहब का नाम लेकर उनके बच्चों के भविष्य से खेल रहे हैं। अगर कश्मीरी समुदाय ने अपनी सोच के रवैये में बदलाव नहीं किया, तो आतंक की आग में वह झुलसता रहेगा और अपने और कश्मीर के भविष्य को गड्ढे में धकेले जाने के लिए अभिशप्त रहेगा।

- ***सम्पादक***

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।- ***सत्यप्रकाश आर्य 9650183335***

सूफियों द्वारा भारत का इस्लामीकरण

- डॉ. विवेक आर्य

.....भारत देश पर इस्लामिक आक्रमण दो रूपों में हुआ था। प्रथम इस्लामिक आक्रमणकर्ताओं द्वारा एक हाथ में तलवार और एक में कुरान लेकर भारत के शरीर और आत्मा पर जख्म पर जख्म बनाते चले गए। दूसरा सूफियों द्वारा मुख में भजन, कीर्तन, चमत्कार के दावे और बगल में कुरान दबाये हुए पीड़ित भारतीयों के जख्मों पर मरहम लगाने के बहाने इस्लाम में दीक्षित करना था। सूफियों को इस्लाम में दीक्षित करने वाली संस्था कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। इस लेख में हम ऐतिहासिक प्रमाणों के माध्यम से यह जानेंगे की सूफियों द्वारा भारत का इस्लामीकरण किस प्रकार किया गया। ....

तवलीन सिंह जानी मानी लेखिका हैं । 26 फरवरी, 2017 के अमर उजाला समाचार पत्र में आप पाकिस्तान की दरगाह में हुए आंतकवादी हमले के विषय में लिखती हैं।

''सिंध में पिछले दिनों जब शहबाज कलंदर की दरगाह पर आत्मघाती हमला हुआ, तो उस हमले के खिलाफ भारत से बहुत कम आवाजें सुनाई पड़ीं। उल्टे पाकिस्तान से ज्यादा आवाजें सुनाई पड़ीं कि इस्लाम का यह सूफियाना रूप उनकी विरासत है। सूफियाना इस्लाम भारत के सनातन धर्म से प्रेरणा लेकर पैदा हुआ। सूफियाना इस्लाम भारत की भी विरासत है और इसे सुरक्षित रखना आज और भी ज्यादा जरूरी हो गया है, क्योंकि वहाबी इस्लाम का हिंसक, जेहादी रूप देख कई देश इस्लाम के खिलाफ हो गए हैं। सो अगर हम यह दिखा सकें कि सूफियाना इस्लाम की वजह से भारत में सदियों से हिन्दू-मुस्लिम शांति-प्यार से रह रहे हैं, तो हो सकता है कि इस्लाम को लोग नई नजरों से देखने लगें।''

तवलीन सिंह की सूफियों के विषय में दी गई राय एक तरफा है। प्राय: हिन्दू समाज में भी यही माना जाता है कि हिंदुस्तान में जितने भी मुस्लमान सूफी, फकीर और पीर आदि हुए हैं, वे सभी उदारवादी थे। हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रतीक थे। वे भारतीय दर्शन और ध्यान योग की उपज थे। मगर यह एक भ्रान्ति है। भारत देश पर इस्लामिक आक्रमण दो रूपों में हुआ था। प्रथम इस्लामिक आक्रमणकर्ताओं द्वारा एक हाथ में तलवार और एक में कुरान लेकर भारत के शरीर और आत्मा पर जख्म पर जख्म बनाते चले गए। दूसरा सूफियों द्वारा मुख में भजन, कीर्तन, चमत्कार के दावे और बगल में कुरान दबाये हुए पीड़ित भारतीयों के जख्मों पर मरहम लगाने के बहाने इस्लाम में दीक्षित करना था। सूफियों को इस्लाम में दीक्षित करने वाली संस्था कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। इस लेख में हम ऐतिहासिक प्रमाणों के माध्यम से यह जानेंगे की सूफियों द्वारा भारत का इस्लामीकरण किस प्रकार किया गया।

सूफियों के कारनामें

हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन कर उन्हें मुसलमान बनाने के लिए सूफियों ने साम-दाम, दंड-भेद की नीति से लेकर तलवार उठाने तक सभी नैतिक और अनैतिक तरीकों का भरपूर प्रयोग किया।

1. शाहजहाँ की मुल्ला मुहीबीब अली सिन्धी नामक सूफी आलिम से अभिन्नता थी। शाहजहाँ ने इस सूफी संत को हिन्दुओं को इस्लाम में दीक्षित करने की आज्ञा दी थी।

2. सूफी कादरिया खानकाह के शेख दाऊद और उनके शिष्य शाह अब्दुल माली के विषय में कहा जाता है कि वे 50 से 100 हिन्दुओं को इस्लाम में दीक्षित करते थे।

3.सूफी शेख अब्दुल अजीज द्वारा अनेक हिन्दुओं को इस्लाम में दीक्षित किया गया।

4. सूफी मीरान भीख के जीवन का एक प्रसंग मिलता है। एक हिन्दू जमींदार बीरबर को मृत्युदंड की सजा सुनाई गई। उसने सूफी मीरान भीख से सजा मांफी की गुहार लगाई। सूफी ने इस्लाम कबूल करने की शर्त लगाई। हिन्दू बीरबर मुसलमान बन गया। सूफी ने इस्लाम की सेवा में उसे रख लिया।

5. दारा शिकोह के अनुसार सूफी शेख अब्दुल कादिर द्वारा अनेक हिन्दुओं को मुसलमान बनाया गया।

6. मीर सैय्यद अली हमदानी द्वारा कश्मीर का बड़े पैमाने पर इस्लामीकरण किया गया। श्रीनगर के काली मंदिर को तोड़कर उसने अपनी खानकाह स्थापित की थी। हिन्दू ब्राह्मणों को छलने के लिए हमदानी के शिष्य नूरुद्दीन ने नंद ऋषि के नाम से अपने को प्रसिद्द कर लिया। नूरुद्दीन ने श्रीनगर की प्रसिद्द हिन्दू उपासक लाल देह के हिन्दू रंग में अपने को पहले रंग लिया। फिर उसके उपासकों को प्रभावित कर इस्लाम में दीक्षित कर दिया। उसके मुख्य शिष्यों के नाम बामुद्दीन, जैनुद्दीन, लतीफुद्दीन आदि रख दिया। ये सभी जन्म से ब्राह्मण थे।

सूफियों द्वारा इस्लाम की सेवा करने के लिए मुस्लिम शासकों को हिन्दुओं पर अत्याचार करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। जिससे हिन्दू तंग आकर इस्लाम ग्रहण कर ले।

1. अल्तमश द्वारा नियुक्त सुहरावर्दी खलीफा सैय्यद नूरुद्दीन मुबारक ने इस्लाम की सेवा के लिए

⋆ शरिया लागू करना।

⋆ मूर्तिपूजा और बहुदेवतावाद को कुफ्र घोषित करना।

⋆ मूर्तिपूजक हिन्दुओं को प्रताड़ित करना।

⋆ हिन्दुओं विशेष रूप से ब्राह्मणों को दंड देना।

⋆ किसी भी उच्च पद पर किसी भी हिन्दू को न आसीन करना।

2. बंगाल के सुल्तान गियासुद्दीन आजम को फिरदवासिया सूफी शेख मुज्जफर ने पत्र लिख कर किसी भी काफिर को किसी भी सरकारी उच्च पद पर रखने से साफ मना किया। शेख ने कहा इस्लाम के बन्दों पर कोई काफिर हुकुम जारी न कर सके। ऐसी व्यवस्था करे। इस्लाम, हदीस आदि में ऐसे स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं।

3. मीर सैय्यद अली हमदानी द्वारा कश्मीर के सुलतान को हिन्दुओं के सम्बन्ध में राजाज्ञा लागू करने का परामर्श दिया गया था। इस परामर्श में हिन्दुओं के साथ कैसा बर्ताव करे। यह बताया गया था।

⋆ हिन्दुओं को नए मंदिर बनाने की कोई इजाजत न हो।

⋆ हिन्दुओं को पुराने मंदिर की मरम्मत की कोई इजाजत न हो।

⋆ मुसलमान यात्रियों को हिन्दू मंदिरों में रुकने की इजाजत हो।

⋆ मुसलमान यात्रियों को हिन्दू अपने घर में कम से कम तीन दिन रुकवा कर उनकी सेवा करे।

⋆ हिन्दुओं को जासूसी करने और जासूसों को अपने घर में रुकवाने का कोई अधिकार न हो।

⋆ कोई हिन्दू इस्लाम ग्रहण करना चाहे तो उसे कोई रोकटोक न हो।

⋆ हिन्दू मुसलमानों को सम्मान दे एवं अपने विवाह में आने का उन्हें निमंत्रण दे।

⋆ हिन्दुओं को मुसलमानों जैसे वस्त्र पहनने और नाम रखने की इजाजत न हो।

⋆ हिन्दुओं को काठी वाले घोड़े और अस्त्र-शस्त्र रखने की इजाजत न हो।

⋆ हिन्दुओं को रत्न जड़ित अंगूठी पहनने का अधिकार न हो।

⋆ हिन्दुओं को मुस्लिम बस्ती में मकान बनाने की इजाजत न हो।

⋆ हिन्दुओं को मुस्लिम कब्रिस्तान के नजदीक से शव यात्रा लेकर जाने और मुसलमानों के कब्रिस्तान में शव गाड़ने की इजाजत न हो।

⋆ हिन्दुओं को ऊँची आवाज में मृत्यु पर विलाप करने की इजाजत न हो।

⋆ हिन्दुओं को मुस्लिम गुलाम खरीदने की इजाजत न हो।

मेरे विचार से इससे आगे कुछ कहने की आवश्यता ही नहीं है।

4. सूफी शाह वलीउल्लाह द्वारा दिल्ली के सुल्तान अहमद शाह को हिन्दुओं को उनके त्योहार मनाने से मना किया गया। उन्हें होली मनाने और गंगा स्नान करने से रोका जाये। सुन्नी फिरके से सम्बंधित होने के कारण सूफी शाह वलीउल्लाह द्वारा शिया फिरके पर पाबन्दी लगाने की सलाह दी गई। शिया मुसलमानों को ताजिये निकालने और छाती पीटने पर पाबन्दी लगाने की सलाह दी गई।

5. मीर मुहम्मद सूफी और सुहा भट्ट की सलाह पर कश्मीर के सुल्तान सिकंदर ने अनंतनाग, मार्तण्ड, सोपुर और बारामुला के प्राचीन हिन्दुओं के मंदिरों को नष्ट कर दिया। हिन्दुओं पर जजिया कर लगाया गया। कश्मीरी हिन्दू ब्राह्मणों को सरकारी पदों से हटाकर ईरान से मौलवियों को बुलाकर बैठा दिया गया।

सूफियों द्वारा हिन्दू मंदिरों का विनाश-

इतिहास में अनेक उदाहरण मिलते हैं जब सूफियों ने अनेक हिन्दू मंदिरों का स्वयं विध्वंश किया अथवा मुस्लिम शासकों को ऐसा करने की प्रेरणा दी।

1. सूफी मियां बयान अजमेर में ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह के समीप रहता था। गुजरात से बहादुर शाह जब अजमेर आया तो सूफी मियां उससे मिले। उस समय राजगद्दी को लेकर गुजरात में अनेक मतभेद चल रहे थे। मियां ने बहादुर शाह की खूब आवभगत की और उसे अजमेर को राजपूत काफिरों से मुक्त करने की गुजारिश की। बाद में शासक बनने पर बहादुर शाह ने अजमेर पर हमला कर दिया। हिन्दू मंदिरों का संहार कर उसने अपने वायदे को निभाया।

2. लखनौती बंगाल में रहने वाले सुहरावर्दी शेख जलालुद्दीन ने उत्तरी बंगाल के देवताला ''देव महल'' में जाकर एक विशाल मंदिर का विध्वंश कर उसे पहले खानकाह में तब्दील किया फिर हजारों हिन्दू और बुद्धों को इस्लाम में दीक्षित किया।

सूफियों द्वारा हिन्दू राज्यों पर इस्लामिक शासकों द्वारा हमला करने के लिए उकसाना

1. चिश्ती शेख नूर कुतुब आलम ने बंगाल के दिनाजपुर के राजा गणेश की

- शेष पृष्ठ 6 पर

बोध कथा

प्रभु में पूर्ण विश्वास

एक भक्त की सच्ची घटना सुनाता हूँ। प्रभु-दर्शन पाने की अभिलाषा लेकर तथा लोक-सेवा में उन्मत्त उसने सब-कुछ त्याग रखा था। दु:खी-जनों को सुख का मार्ग बताने में वह निरन्तर स्थान-स्थान पर घूमता तथा भ्रमण करता रहता। जिधर जाता, जनता उसका मान करती, सिर पर उठा लेती, परन्तु इस मान पर उसने कभी ध्यान नहीं दिया। हाँ, कभी-कभी उसे यह कहते सुना गया कि तुम्हारे इस मान पर राख की एक मुट्ठी! तब क्या हुआ कि ऐसा आन्दोलन शुरू हुआ, जिसके सम्बन्ध में उसने कह दिया कि इसे स्थगित कर देना ही उचित है। तब उसे कुछ लोगों की ओर से गालियाँ पड़ने लगीं। स्वार्थी जन लांछन भी लगाने लगे, परन्तु उसे पूर्ववत् लोगों ने हँसता ही पाया। वह प्रभु-प्रेम में उसी प्रकार उन्मत्त था। लोगों ने कहा-''इतना अपमान तुम्हारा हो रहा है। तुम फिर भी प्रभु-भक्ति की बातें करते हो?''

उसने कहा-''तुम्हारे इस अपमान पर राख की दूसरी मुट्ठी! यह तो मेरी परीक्षा है कि मैं मान में तथा अपमान में, दोनों में नारायण का विश्वासी रह सकता हूँ या नहीं।''

यह है प्रभु में पूर्ण विश्वास!

प्रभु में जिसका हो अचल,
शुचि श्रद्धा विश्वास।
कभी न होता वह विफल,
कभी न कहीं निराश।।

- साभार -
बोध कथाएं

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

ऋषि दयानन्द और सर्वधर्म समभाव

– डॉ. भवानीलाल भारतीय

आज के सार्वजनिक जीवन में सर्व-धर्म समभाव सब धर्मों (मतों) के प्रति आदर रखना एक चालू मुहावरा बन गया है। सच तो यह है कि सर्व-धर्म समभाव अथवा इसी आशय को व्यक्त करने वाले वाक्य बिना गहराई से सोचे-विचारे प्रयोग किये जाते हैं। धर्म जैसे व्यापक अर्थ देने वाले शब्द को हमने मत, सम्प्रदाय, पन्थ तथा मजहब का पर्याय बना दिया है। वस्तुत: सम्पूर्ण मानव जाति का धर्म एक है और वह है 'मानवता' जिसके अंतर्गत सत्य, अहिंसा, विश्व मैत्री, परस्पर प्रेम, विद्या-विवेक आदि शाश्वत मानव मूल्य आते हैं। ऋषि दयानन्द ने वर्षों पूर्व इस गुत्थी को सुलझाया था और स्पष्ट किया कि हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिख तथा पारसी आदि को धर्म कहना उचित नहीं है। ये मत, पन्थ, फिरके तथा सम्प्रदाय हैं। सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में एक जिज्ञासु और तत्त्ववेत्ता के संवाद के द्वारा उन्होंने स्पष्ट किया कि जो धर्म के मूल तत्त्व हैं वे सभी मतानुयायियों को मान्य होने के कारण मानव मात्र का समान धर्म है। इस प्रकार उन्होंने सत्य भाषण, विद्या-प्राप्ति, ब्रह्मचर्य पालन (संयमित जीवन), सत्संग, पुरुषार्थ तथा सत्य-व्यवहार को मानव का समान धर्म बताया जबकि अन्य बातों में उनकी भिन्नता को वे शाश्वत् धर्म नहीं कहते।

जब मानवता ही मनुष्य का एकमात्र धर्म है और मनुप्रोक्त दस लक्षण वाला धर्म सब लोगों के द्वारा मान्य है तो सवाल यह है कि मनुष्यों को भिन्न-भिन्न मतों, पन्थों और फिरकों में बांटने का हानिकारक काम क्यों किया गया? उत्तर में कहा जा सकता है कि नैतिकता और सदाचार को सर्व सम्मत धर्म मान लेने के उपरान्त भी विभिन्न देशों में परमात्मा की पूजा उपासना के भिन्न-भिन्न तरीके ईजाद किये गये और उसी के अनुरूप आचार-विचार, शौच-अशौच तथा वैयक्तिक एवं सामाजिक कर्मकाण्ड में पृथकता आती गई। यही कारण है कि भारतवर्ष में जब वैदिक धर्म का पतन हुआ तो जैन, बौद्ध, चार्वाक आदि मत पैदा हुए और इनके बाद शैव, शाक्त, वैष्णव, सगुण-निर्गुण भक्ति सम्प्रदाय तथा सन्त-तम प्रवर्तित हुए। उधर ईरान में महात्मा जरयुस्त (जोरेस्टर) ने पारसी मत को जन्म दिया। इसके तत्काल बाद मध्य एशिया (पैलेष्टाइन तथा अरब) में पैगम्बरों की अवधारणा वाले यहूदी, ईसाई तथा ईसाई-सैमेटिक मतों का जन्म हुआ। ये मत वे थे जो तौरेत, बाईबिल तथा कुरान नाम वाली ईश्वरीय पुस्तकों तथा मूसा-ईसा-मुहम्मद नाम वाले ईशदूतों (पैगम्बरों) के उपदेशकों को महत्त्व देते थे। ध्यान रहे कि भारतीय मान्यता के अनुसार वेदों को ईश्वरीय ज्ञान मानना तथा किसी किताब को खुदाई कलाम मानने की धारणा में मौलिक अंतर है। सैमेटिक मजहबों में देश, काल और परिस्थिति के अनुसार भिन्नता दिखाई देती है। ये विभिन्न खेमों में मानवता को बांटते हैं।

तब प्रश्न होता है कि क्या धार्मिक आस्थाओं, विभिन्न दार्शनिक मान्यताओं, आचारमत भिन्नता तथा कर्मकाण्ड की भिन्नता के होते हुए क्या मानव समुदाय में एकता तथा अविरोध सम्भव है?

स्वामी दयानन्द इसके उत्तर में कहते हैं कि परस्पर विचार-विनिमय तथा सौहार्दपूर्ण चर्चाओं के द्वारा हम शाश्वत् मानव धर्म की एकता को स्वीकार कर सकते हैं। यही कारण है कि सर सैयद अहमद खां, ईसाई पादरी डॉ. स्काट आदि सैमेटिक मतों वाले पुरुष स्वामी दयानन्द भक्त और प्रशंसक बन गये। उनका कहना था कि कोई मनुष्य अपनी निजी मजहब विषयक मान्यताओं को रखते हुए भी अन्य मत वालों से प्रेम तथा बन्धुत्व का भाव रख सकता है। इस परिप्रेक्ष्य में देखें तो सर्व धर्म समभाव तथा सब मत-सम्प्रदाय एक हैं, एक सी शिक्षा देते हैं जैसे पाखण्डपूर्ण, अर्थहीन कथन व्यर्थ हो जाते हैं। सर्व धर्म समभाव का नारा लगाने वाले गीता, वेद, कुरान, बाईबिल और ग्रन्थ साहब को एक ही श्रेणी में रखते हैं तथा उनकी शिक्षाओं को एक सा (एक ही) बताते हैं। सच तो यह है कि इन बड़बोले, बेसमझ लोगों ने न तो वेद और गीता को पढ़ा और न बाइबिल या कुरान के दर्शन किये।

यदि तटस्थ भाव से उपर्युक्त ग्रन्थों का अध्ययन किया जाये तो इन ग्रन्थों की पृथक्-पृथक् विषय वस्तु तथा इनमें प्रतिपादित मन्तव्यों के अन्तर को हम समझ सकेंगे। तब हमें पता चलेगा कि वेद की शिक्षाएं शाश्वत्, सर्वदेशीय तथा सर्व स्वीकार्य हैं। इस स्थिति में सब धर्मों (मतों) की एकता की बात करना रामाय स्वस्ति (राम का कल्याण हो) तथा उसी सुर में रावणय स्वस्ति (रावण का भी कल्याण हो) कहने के समान है। सच तो यह है कि हमें दयानन्द द्वारा कही गई इस कड़वी सच्चाई से रूबरू होना ही पड़ेगा कि सर्व धर्म समन्वय निरर्थक शब्द है और राम तथा रावण को एक साथ आशीर्वाद नहीं दिया जा सकता। – ***जोधपुर (राज.)***

अगर मामला किसी पंडित से जुड़ा होता तो.....?

.....निरक्षर जनता पादरियों के निर्देशन में संचालित होती थी और पादरी अपना प्रभाव जमाए रखने के लिए जनसमुदाय में सभी प्रकार से अंधविश्वास फैलाकर अपना कुकृत्य करते रहते थे। भारत के आदिवासी इलाकों में तो यही काम ''जीसस'' भगवान को 'खुश' करने के नाम पर हो रहा है। एक अनुमान के मुताबिक भारत में होने वाले यौन अपराधों में मुश्किल से एक फीसदी केस पुलिस में रिपोर्ट हो पाते हैं। इस कारण विदेशों में यौन शोषण और दूसरे अपराध में पकड़े जाने वाले कई पादरी भी भागकर भारत आ जाते हैं और यहां उन्हें बाइज्जत किसी चर्च में पादरी के तौर पर नियुक्त कर दिया जाता है। .....

शायद अब यह बात किसी से छुपी नहीं रही है कि चर्च में सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है। दुनियाभर में ईसाइयत के अनुयायियों का बर्ताव बदल रहा है। भारत में ईसाइयत पहले चर्च में बदली अब यह चर्च ननों के शोषण के केंद्र बनते जा रहे हैं। इसी माह केरल के कन्नूर में चर्च के पादरी द्वारा एक नाबालिग लड़की के साथ रेप का मामला दर्ज हुआ है। इस मामले में नाबालिग पीड़ित नन ने बच्चे को जन्म भी दिया। हालाँकि इसमें मामले में शामिल और यौन अपराध छिपाने के अपराध में पुलिस ने प्राइवेट हॉस्पिटल के इंचार्ज, इसमें शामिल अन्य पांच ननों को भी गिरफ्तार कर लिया है। इन सभी पर पादरी के रेप केस को छुपाने का आरोप है। इस मामले से एक बार फिर ईसाइयत और चर्च की पवित्रता को संदेह के कटघरे में खड़ा कर दिया।

इस पूरे मामले में देश-विदेश की मीडिया खामोश है। कारण यह मामला ईसाइयत से जुडा है। यदि इस तरह का कोई मामला किसी मंदिर या अन्य हिन्दू धार्मिक संस्था से जुड़ा होता तो अभी तक मीडिया इस पर सबसे बड़ी बहस या सबसे बड़ा सवाल बनाकर ताल ठोक रही होती। हम यह नहीं कहते कि ऐसे मामले दबाये जाये, नहीं! गलत कार्य जहाँ भी हो, उन्हें उजागर कर दोषी को सजा होनी चाहिए। किन्तु मीडिया को किसी धार्मिक पूर्वाग्रह से शिकार नहीं रहना चाहिए।

यह सिर्फ एक अकेला मामला नहीं है ऐसे बहुतेरे मामले पहले भी संज्ञान में आते रहे हैं। लेकिन उस तरह नहीं जिस तरह हिन्दू साधू संतों या पुजारियों को निशाना बनाकर धर्म को नाम बदनाम किया जाता है। देश भर में ईसाई कॉन्वेंट स्कूलों में बच्चों के यौन शोषण के मामलों में तेजी आई है। इससे इन स्कूलों में पढ़ने वाले लाखों बच्चों की सुरक्षा पर सवाल गहराते जा रहे हैं। इस ताजा मामला के अलावा भी केरल के कोच्चि के एक कॉन्वेंट स्कूल के प्रिंसिपल फादर बेसिल कुरियाकोस को 10 साल के लड़के के साथ कुकर्म के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। ये बच्चा किंग्स डेविड इंटरनेशनल स्कूल में पढ़ता था। बच्चे के मां-बाप की शिकायत के बाद 65 साल के इस दरिंदे पादरी को गिरफ्तार कर लिया गया था।

जिस तरह आज कान्वेंट स्कूलों की संख्या बढ़ रही आधुनिक दौर में लोग इन्हें शिक्षा के बेहतर विकल्प के तौर पर इनको चुन रहे हैं या अपनी सोसायटी में इनका प्रचार करते भी नहीं थकते। जबकि इनका असली रूप कुछ और ही बयान करता है। 2014 में केरल के त्रिचूर में सेंट पॉल चर्च के पादरी राजू कोक्कन को 9 साल की बच्ची से रेप के केस में गिरफ्तार किया गया था। चर्च के अंदर दरिंदगी का ये अब तक का सबसे खौफनाक मामला माना जाता है। इस वहशी पादरी ने चॉकलेट का लालच देकर बच्ची को कई बार अपनी हवस का शिकार बनाया था। कम से कम तीन बार तो उसने ये काम चर्च के अंदर अपने कमरे में किया। 2014 में ही फरवरी से अप्रैल के बीच केरल के अंदर ही तीन कैथोलिक पादरी बच्चों से बलात्कार के केस में गिरफ्तार किए गए। विडम्बना देखिये ज्यादातर मामलों में ईसाई संगठनों ने शर्मिंदा होने के बजाय अपने पादरियों का बचाव किया। कुछ समय पहले ही केरल के एर्नाकुलम में एक नाबालिग लड़की से बलात्कार के आरोपी 41 साल के पादरी एडविन फिगारेज को एक साथ दो-दो उम्रकैद की सजा सुनाई गई थी ये पादरी कलाकार भी था और इसके कई म्यूजिक एलबम बाजार में हैं। बच्ची को म्यूजिक सिखाने के नाम पर उसके साथ कई महीने तक दरिंदगी की गई थी।

अप्रैल 2012 कैथोलिक चर्च की एक पूर्व नन मैरी चांडी ने ईसाइयत के आध्यात्म से घिनौने सच से पर्दा उठाया था। उन्होंने अपनी आत्मकथा ''ननमा निरंजवले स्वस्तिक'' के जरिये चर्चो में पादरियों द्वारा ननों के यौन शोषण से पर्दा हटाकर हंगामा खड़ा कर दिया था। चर्च में होने वाले अनैतिक कृत्यों के अलावा आत्मकथा में गर्भ में ही बच्चों को मार देने की बढ़ती प्रवृत्ति का भी उल्लेख किया था। 2002 में धार्मिक अध्ययन के प्रोफेसर मैथ्यू शेल्म्ज ने एक लेख में माना था कि भारत भर में फैले कैथोलिक चर्च में नन और बच्चों के साथ यौन शोषण के मामले बढ़ रहे हैं। हालांकि इसके बारे में ज्यादा बात नहीं होती और अधिकतर केस पुलिस और कोर्ट तक कभी नहीं पहुंच पाते। दूरदराज के इलाकों में चल रही मिशनरी में यौन शोषण के ज्यादातर केस दबे रह जाते हैं, क्योंकि पीड़ित अक्सर गरीब तबके के लोग होते हैं और उन्हें पैसे देकर चुप करा दिया जाता है।

एक समय था जब मध्ययुगीन यूरोप का समाज अंधविश्वास का शिकार था। निरक्षर जनता पादरियों के निर्देशन में संचालित होती थी और पादरी अपना प्रभाव जमाए रखने के लिए जनसमुदाय में सभी प्रकार से अंधविश्वास फैलाकर अपना कुकृत्य करते रहते थे। भारत के आदिवासी इलाकों में तो यही काम ''जीसस'' भगवान को 'खुश' करने के नाम पर हो रहा है। एक अनुमान के मुताबिक भारत में होने वाले यौन अपराधों

– शेष पृष्ठ 7 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बोध दिवस (शिवरात्रि) पर विशाल ऋषि मेला

बोधोत्सव समारोह में सम्बोधित करते सर्वश्री सतीश चड्ढा, कीर्ति शर्मा, डॉ. सुभाष चन्द्र जी, डॉ. दर्शनलाल आजाद जी, रविदेव चड्ढा एवं श्री सुभाष आर्य जी

उद्बोधन देते सर्वश्री छविकृष्ण शास्त्री जी, डॉ. विनय विद्यालंकार जी, ईश कुमार नारंग जी एवं केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी।

अतिथि को स्मृति चिह्न : श्री सुभाष आर्य जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, श्री छविकृष्ण शास्त्री जी को स्मृति चिह्न देते महाशय धर्मपाल जी, मनोज गुलाटी जी, प्रेम अरोड़ा जी, राजेन्द्र जी, शिव कुमार मदान जी, अरुण प्रकाश वर्मा जी, सुरेन्द्र रैली जी, विनय विद्यालंकार जी, हरिओम बंसल, डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती जी, विक्रम नरुला जी, रविदेव जी एवं श्री धर्मपाल आर्य जी

समर्पित कार्यकर्ताओं को पुरस्कार : कु. हविषा आर्या को श्री राजीव आर्य स्मृति पुरस्कार। श्रीमती विद्यावती जी को डॉ. मुमुक्षु आर्य माता विद्यावती महिला पुरस्कार, श्री धर्मेन्द्र आर्य जी को श्री सुरेश ग्रोवर आर्य कार्यकर्ता स्मृति पुस्कार एवं श्री देवेन्द्र आर्य जी को माता रुक्मिनी देवी आर्या स्मृति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

विभिन्न विद्यालयों के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति। ध्वजारोहण करते आर्यसमाज सी-3 जनकपुरी एवं आर्यसमाज न्यू मोती नगर के अधिकारीगण।

सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री अनिल तनेजा जी का स्वागत करते आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के वरिष्ठ उप प्रधान श्री सुरेन्द्र रैली जी एवं विभिन्न खेल कूद प्रतियोगिताओं में भाग लेते बच्चे।

समारोह में उपस्थित आर्यजनों से भरा पण्डाल

- शेष पृष्ठ 8 पर

Glimpses of the YajurVeda

- Dr. Priyavrata Das

Continue from last issue :-

Great Fortune

O man, move like a swift horse to attain perfection and prosperity. You have the privilege to aspire to be noble and to reach the goal. A laggard is bereft of fortune. May your every mpment be auspiciously engaged in efforts. Dig out the fire from the very place you stand on the earth. Ascend to the world of light, the sorrowless world. O lord, may we be favoured by mother earth while digging fire from her breast, the fire of wisdom and strength, of perseverance and firmness. May we perpetuate her glory. May our fortune fly aloft with the illustrious flag of earth facing the dazling sun in the high sky. May our flag bear the spirit of the rays of the sun. May the earth and the sun ever inspire us. O Lord, Sovereign of men, quick dispeller of darkness, shining with imperishable lustre, may we dig up the brilliant fire from the lap of the earth in surveillance of the mighty sun. May we proceed to the sorrowless world with the spiritual fire in our hearts. May we utilize our maysterious body for fortune. May we thus rise up to heaven that admits no misery and sorrow.

उत्क्राम महते सौभगायास्मादा स्थानाद् द्रविणोदा वाजिन्। वयँ स्याम सुमतौ पृथिव्याऽअग्निं खनन्तऽउपस्थेऽ अस्याः।। (Y.v xi.21)

Utkrama mahate saubha gayasmadasthanad dravinoda vajin.

vayam syama sumatau prthivya agnim khananta upasthe asyah..

Ten Facets of Woman

O woman! the Creator Lord has blessed you with many virtues. You are "Ida" because of your sweet and tender words. Your gentle voice consoles one and all. You are 'Ranta,' i.e. pleasing. Your every act is pleasant and heart touching. You are 'Havya' because you sacrifice your own comforts and joy for the good of others. Man craves your appearance and company. So you are 'Kamya'.

O woman! you are 'Chandra'. Like the moon you give joy to all. You console everybody smilingly at the critical moments of the family. You are 'Jyoti' for you illumine the house as the bright lamps do, You are 'Aditi' because you maintain the tradition of the family by giving birth to sons and daughters. You are "Sarasvati". You give excellent advice with your intellectual acumen. You are the mysterious giver of the knowledge of creation. You are "Vismrti". You become famous by bestowing glorious children. You are "Aghnya" by virtue of your feminine power that saves you even if you commit grave mistakes. In the creation of the Supreme Lord, you alone are the builder, sustainer and saver of the human race. Families and nations are destroyed when such a woman is dishonoured.

इडे रन्ते हव्ये काम्ये चन्द्रे ज्योतेऽदिते सरस्वति महि विश्रुति।

एता तेऽअघ्न्ये नामानि देवेभ्यो मां सुकृतं ब्रूतात्। (Y.v viii.43)

Ide rante havye kamye candre jyoute 'dite sarasvati mahi visruti.

eta te'aghnye namani devebhyo mam sukrtam brutat..

Domestic Science

Household is the largest organisation on earth. The preacher, the soldier, the trader, the trader, the artisan, the saint, the ruler, all kinds of people are born and brought up in the household. The verse says; 'O child, you are majestic through your mother and mighty through your father. Ever since you come to the mother's womb, the mother is fully dedicated to your welfare. Her food, thought and conduct shape your body and mind. The more austere she is, the more virtuous you become in life. Your father protects and educates you. Under his support, you achieve courage and manners. With the care of father and mother you live meaningfully and grow beautifully'.

Household is the laboratory where the finer qualities of man like love, affection, kindness and devotion are learnt and applied. Domestic science, therefore, is of great significance. "O member of the household ! be a swift runner, a courser, evergrowing. Be a racer, a swift horse the raise the household to heavenly abode. May the bounties of Nature protect the householder. May all follow the righteous and honest path adopted by the celesstial bodies. May this house be ever delighted and pious, and shower peace and blessings all round".

विभूर्मात्रा प्रभूः पित्राश्वोऽसि हयोऽ स्यत्योऽसि मयोऽस्यर्वांसि सप्तिरसि। वाज्यसि वृषासि नृमणाऽसि। ययुर्नामाऽ सि शिशुर्नामाऽसि आदित्यानां पत्वान्विहि देवाऽआशापालाऽएतं देवेभ्योऽश्वं मेधाय प्रोक्षितँ रक्षतेह रन्तिरिह रमतामिह धृतिरिह स्वधृतिः स्वाहा।। (Y.v. xxii. 19)

Vibhuramatra prabhuh pitra'svo'si hayo' syatyo'si mayo' syarva si saptirasi vajyasi vrsa si nrmana asi. yayurnama si sisurnamasi adityanam patva nvihi deva asapala etam devebhyo' svam medhaya proksitam raksateha rantiriha ramatam iha dhrtiriha svadhrtih svaha..

To be Conti....

Contact No. 09437053732

पृष्ठ 3 का शेष

बढ़ते शासन से क्षुब्ध होकर जौनपर के इस्लामिक शासक सुल्तान इब्राहिम शाह को हमला करने के लिए न्योता दिया। गणेश राजा ने भय से अपने बेटे को इस्लाम काबुल करा अपनी सत्ता बचाई।

2. शेख गौस द्वारा ग्वालियर के किले को जिताने में बाबर की सहायता की गई थी।

3. शेख अहमद शाहिद द्वारा नार्थ वेस्ट फ्रंटियर प्रोविंस में हजारों अनुयाइयों को नमाज पढ़ने के बाद सिखों के राज को हटाने के लिए इस्लाम के नाम पर रजामंद किया गया।

सूफियों का हिन्दुओं के प्रति सौतेला व्यवहार

हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रतीक के नाम से प्रसिद्ध सूफियों का हिन्दुओं के प्रति व्यवहार मतान्ध और संकुचित सोच वाला था।

1. सूफी वलीउल्लाह का कहना था कि मुसलमानों को हिन्दुओं के घरों से दूर रहना चाहिए जिससे उन्हें उनके घर के चूल्हे न देखने पड़ें। यही वलीउल्लाह सुल्तान मुहम्मद गजनी को खिलाफत-ए-खास के बाद इस्लाम का सबसे बड़ा शहंशाह मानता था। उसका कहना था कि मुहम्मद के इतिहासकारों ने नहीं पहचाना कि मुहम्मद गजनी की जन्मपत्री मुहम्मद साहिब से मिलती थी इसीलिए उसे जिहाद में आशातीत सफलता प्राप्त हुई। हिन्दुओं पर अथाह अत्याचार करने वाले गजनी की प्रशंसा करने वाले को क्या आप हिन्दू मुस्लिम एकता का प्रतीक मानना चाहेंगे?

2. सूफी सुहरावर्दी शेख जलालुद्दीन द्वारा अल्लाह को हिन्दुओं द्वारा ठाकुर, धनी और करतार जैसे शब्दों का प्रयोग करने से सख्त विरोध था।

इस लेख के माध्यम से हमने भारत वर्ष के पिछले 1200 वर्षों के इतिहास में से सप्रमाण कुछ उदाहरण दिए हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि सूफियों का मूल उद्देश्य भारत का इस्लामीकरण करना था। अजमेर के ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती, दिल्ली के निजामुद्दीन औलिया, बहराइच के सालार गाजी मियां के विषय में कब्र पूजा, मूर्खता अथवा अन्धविश्वास नामक लेख में विस्तार से प्रकाश डाला जायेगा। आशा है इस लेख को पढ़कर पाठकों की इस भ्रान्ति का निवारण हो जायेगा कि सूफी संतों का कार्य शांति और भाईचारे का पैगाम देना था।

प्रेरक प्रसंग

लाला जीवनदास जी का हृदय परिवर्तन

आर्यसमाज के इतिहास से सुपरिचित सज्जन लाला जीवनदासजी के नाम नामी से परिचित ही हैं। जब ऋषि ने विषपान से देह त्याग किया तो जो आर्यपुरुष उनकी अन्तिम वेला में उनकी सेवा के लिए अजमेर पहुँचे थे, उनमें लाला जीवनदासजी भी एक थे।

आप पंजाब के एक प्रमुख ब्रह्म समाजी थे। ऋषिजी को पंजाब में आमन्त्रित करने वालों में आप भी एक थे। लाहौर में ऋषि के सत्संग से ऐसे प्रभावित हुए कि आजीवन वैदिक धर्म-प्रचार के लिए यत्नशील रहे। ऋषि के विचारों की आपपर ऐसी छाप लगी कि आपने बिरादरी के विरोध तथा बहिष्कार आदि की किंचत् भी चिन्ता न की। जब लाहौर में ब्राह्मसमाजी भी ऋषि की स्पष्टवादिता से अप्रसन्न हो गये तो लाला जीवनदासजी ब्राह्मसमाज से पृथक् होकर आर्यसमाज के स्थापित होने पर इसके सदस्य बने और अधिकारी भी बनाये गये।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि जब ऋषि लाहौर में पधारे तो उनके रहने का व्यय ब्राह्मसमाज ने वहन किया था। पता नहीं श्री डॉ. भवानीलालजी भारतीय ने अपने द्वारा लिखित ऋषि जीवन में किस आध ाार पर यह लिख दिया कि ब्राह्मसमाजियों ने ऋषि से यह व्यय माँग लिया।

पंजाब ब्राह्मसमाज के प्रधान लाला काशीरामजी और आर्यसमाज के एक यशस्वी नेता पण्डित विष्णुदत्तजी के लेख इस बात का प्रतिवाद करते हैं।+

लाला जीवनदासजी में वेद-प्रचार की ऐसी तड़प थी कि जहाँ कहीं वे किसी को वैदिक मान्तयाओं के विरुद्ध बोलते सुनते तो झट से वार्तालाप, शास्त्रार्थ वा धर्मचर्चा के लिए तैयार हो जाते। पण्डित विष्णुदत्तजी के अनुसार वे विपक्षी से वैदिक दृष्टिकोण मनवाकर ही दम लेते थे।

अनेक व्यक्तियों ने उन्हीं के द्वारा सम्पादित और अनूदित वैदिक सन्ध्या सीखी थी।

अपने जीवन के अन्तिम दिनों में पण्डित लेखराम इन्हीं के निवास स्थान पर रहते थे और यहीं वीरजी ने वीरगति पाई थी।

राजकीय पद से सेवामुक्त होने पर आप अनारकली बाजार लाहौर में श्री सीतारामजी आर्य लकड़ीवाले की दुकान पर बहुत बैठा करते थे। वहाँ युवक बहुत आते थे। उनसे वार्तालाप करके आप बहुत आनन्दित होते थे। बड़े ओजस्वी ढंग से बोला करते थे। विचित्र बात तो यह है कि वे व्याख्याता नहीं थे। प्रबन्ध ा-पटु थे तथापि बातचीत से ही अनेक व्यक्तियों को आर्य बना गये। धन्य है ऐसे पुरुषों का हृदय-परिवर्तन।

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

संगीत एवं गीता प्रवचन कार्यक्रम

आर्य समाज पूर्वी पंजाबी बाग, नई दिल्ली के तत्त्वावधान में 16 से 19 मार्च 2017 के मध्य ढ्रींगरा पार्क पूर्वी पंजाबी बाग में संगीत एवं गीता प्रवचन कायक्रम आयोजित किया जा रहा है। गीता प्रवचन आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री एवं भजन आचार्य देवेन्द्र आर्य जी प्रस्तुत करेंगे।

-डॉ. अशोक नांग्या, संयोजक

11 कुण्डीय महायज्ञ का आयोजन

आर्य समाज सै. 3, 4, 5, 6 रोहिणी एवं विजय विहार एवं आर्य समाज प्रशान्त विहार व आर्य समाज सै.7, सै. 15 रोहिणी के तत्त्वावधान में होली एवं शहीदी दिवस पर दिनांक 19 मार्च 2017 प्रात: 8 बजे से 11 कुण्डीय महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। मुख्य अतिथि श्रीमती शोभा विजेन्द्र निगम पार्षद श्रीमती संजना संसार सिंह निगम पार्षद होंगी। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य शिव नारायण शास्त्री जी होंगे एवं मुख्य वक्ता डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी (अन्तर्राष्ट्रीय कवि) होंगे।

- कृष्ण चन्द पाहूजा, प्रधान

होली मंगल मिलन सम्पन्न

आर्य समाज केशवपुरम् द्वारा 5 मार्च 2017 होली मंगल मिलन समारोह अयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ एवं भजन से हुआ। यज्ञ ब्रह्मा बलबीर शास्त्री जी रहे व भजन पं. दिनेश आर्य जी ने प्रस्तुत किये। सभी महानुभावों ने चंदन और फूलों से होली खेली एवं जलपान किया। *-सतवीर पसरीचा, प्रधान*

उपदेशक विद्यालय/विभाग का शुभारम्भ

आर्य गुरुकुल महाविद्यालय नर्मदापुरम होशंगाबाद में आचार्य सत्यसिन्धु आर्य के जन्मोत्सव स्वर्ण जयन्ती समारोह के अवसर पर 10 जून 2017 से उपदेशक-महाविद्यालय / विभाग का शुभारम्भ किया जा रहा है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य आर्य जगत के लिए उपदेशक व प्रचारक तैयार करना है। पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए न्यूनतम 10वीं कक्षा उत्तीर्ण व आयु 18 वर्ष होनी चाहिए। सम्पर्क करें- 09424471288, 9907056726 ।

- आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक

पृष्ठ 4 का शेष

अगर मामला किसी पंडित से ....

में मुश्किल से एक या दो फीसदी केस पुलिस में दर्ज हो पाते हैं। इस कारण विदेशों में यौन शोषण और दूसरे अपराध में पकड़े जाने वाले कई पादरी भी भागकर भारत आ जाते हैं और यहां उन्हें बाइज्जत किसी चर्च में पादरी के तौर पर नियुक्त कर दिया जाता है। भारत ही नहीं यदि बाहर का रुख करें तो आस्ट्रेलिया में बच्चों के यौन शोषण से जुड़े मामलों पर नजर रखने वाली रॉयल कमीशन नाम की संस्था की जांच के मुताबिक देश के करीब 40 फीसदी चर्च पर बच्चों के यौन शोषण के आरोप हैं। 1980 से 2015 के बीच करीब 4,500 लोगों ने यौन शोषण होने की शिकायत दर्ज कराई थी यह कमीशन आस्ट्रेलिया में धार्मिक और गैर धार्मिक जगहों पर होने वाले यौन शोषण की जांच करने की सबसे शीर्ष संस्था है। बहरहाल अब पीड़ितों की कहानियां अवसाद भरी हो या दर्द भरी उनका शोषण कर पादरी और धार्मिक गुरू आसानी से बच जाते हैं। क्योंकि बड़ी-बड़ी इसाई मिक्सनरीज का मीडिया हाउस पर कब्जा है। जो ऐसे मामलों को दबा देती है। बस एक बार फिरसवाल अपनी जगह फिर वही खड़ा है कि यदि ऐसा कोई मामला किसी पंडित या पुजारी से जुड़ा होता तो क्या होता?

- राजीव चौधरी

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

वैदिक शगुन लिफाफे
महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में
सिक्के वाले मात्र 500/-रु. सैंकड़ा
बिना सिक्के मात्र 300/-रु. सैंकड़ा
प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली
दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

आर्य कन्या गुरुकुल, नई दिल्ली का सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न

आर्य कन्या गुरुकुल, राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली की बालिकाओं का भारतीय विद्यापीठ इंजीनियरिंग विश्वविद्यालय एवं भारतीय विद्यापीठ मैनेजमैन्ट स्टडीज़ विश्वविद्यालय पश्चिम विहार नई दिल्ली के सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रभावशाली प्रस्तुति की। कार्यक्रम में यशस्वी प्रधान श्री वेद प्रकाश जी के विशेष सहयोग से कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर की बालिकाओं को ऑडीटोरियम में उपस्थित गणमान्य अतिथियों प्राध्यापकों एवं इन्जीनियरिंग व मैनेजमेन्ट के छात्रों-छात्राओं के समक्ष वेद पाठ , देशप्रेम व राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत गायन व नृत्य की प्रस्तुति का अवसर प्राप्त हुआ। प्रान्तीय महिला सभा की प्रधाना श्रीमती प्रकाश कथूरिया ने उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों, प्राध्यापकों एवं छात्र-छात्रओं को आर्य समाज, महर्षि दयानन्द सरस्वती, आर्य मान्यताएं एवं वेदों के ज्ञानसे अवगत कराया। - *संचालिका*

89वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज पीपाड़ नगर, जोधपुर का 89वें वार्षिकोत्सव पर 7 से 11 फरवरी तक सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ ब्रह्मा आर्य कन्या गुरुकुल की आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा थीं, उनके साथ आई गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों ने सस्वर वेद पाठ किया। कु. अंजली आर्य के सुन्दर भजन आकर्षण का केन्द्र रहे। कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि उपदेशक व भजनोपदेशक सभी महिलाएं थी। अन्त में सामाजिक धार्मिक एवं जनहित हेतु सेवाएं देने वाले महानुभावों को प्रशस्ति पत्र एवं स्मृतिचिह्न देकर सम्मानित किया गया। *- चम्पालाल आर्य, मंत्री*

महर्षि जन्मोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मंदिर हंसापुरी नागपुर 21 से 24 फरवरी के मध्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव के उपलक्ष में चतुर्वेदशतक यज्ञ हुआ जिसमें 51 जोड़ों ने यज्ञ में भाग लिया। यज्ञ ब्रह्मा पं. कृष्ण कुमार शास्त्री ने धर्म, संस्कार व संस्कृति पर अपने विचार रखे। इस अवसर पर बच्चों की प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया। आर्य समाज हंसापुरी के प्रधान श्री अनिल शर्मा ने नारी शिक्षा पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में आर्य समाज वर्धा के प्रधान श्री ताराचन्दचौबे, ताजनगर के प्रधान श्री हरिदत्त जुमडे, श्री नवघरे जी भी उपस्थित हुए। *- अशोक यादव*

आर्य सन्देश के आजीवन सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त आजीवन सदस्यों की सूचनार्थ निवेदन है कि आर्यसन्देश का आजीवन शुल्क 10 वर्ष के लिए होता है, किन्तु सभा की ओर से अभी किसी भी सदस्य की सदस्यता को निरन्त नहीं किया गया है। आर्यसन्देश साप्ताहिक अपका अपना पत्र है, जिसके सफल एवं निरन्तर प्रकाशन में आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। अत: ऐसे समस्त सदस्यों, जिन्होंने 2007 से पूर्व आजीवन सदस्यता ग्रहण की हो वे अपना आगामी 10 वर्षीय शुल्क 1000/- रुपये भेजकर तत्काल अपनी आजीवन सदस्यता का नवीनीकरण 2027 तक करवा लेवें, जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। - *सम्पादक*

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव पर 51 कुण्डीय महायज्ञ सम्पन्न

आर्य कन्या विद्यालय समिति के तत्त्वावधान में आयोजित महर्षि दयानन्द सरस्वती की 193वीं जयंती के अवसर पर विश्वशांति एवं सुख समृद्धि के लिए वैदिक विद्या मंदिर स्वामी दयानन्द मार्ग में 51 कुण्डीय महायज्ञ हुआ।

मुख्य अतिथि राजऋषि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. भारतसिंह द्वारा ओ३म् ध्वज फहराकर एवं दीप प्रज्ज्वलित कर यज्ञ कार्य प्रारम्भ किया। अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुल सचित रमेश चन्द्र भारद्वाज ने की। यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. शिव पूजन विद्यालंकार एवं अधिष्ठाता आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के पूर्व मंत्री पं. अमरमुनि, आर्य शिरोमणि पं. विनोदीलाल दीक्षित एवं शिवकुमार कौशिक रहे। समिति प्रधान श्री जगदीश गुप्ता ने अतिथियों को पीतवस्त्र अर्पित कर स्वागत किया। कार्यक्रम के अन्त में मंत्री श्री प्रदीप कुमार आर्य ने उपस्थित समस्त अतिथियों का आभार प्रकट किया।

-कमला शर्मा, निदेशक

हेतराम आर्य सभागार का उद्घाटन

आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग, अवलर द्वारा नवनिर्मित पं. हेतराम आर्य सभागार का उद्घाटन 23 फरवरी 2017 दोपहर 3 बजे श्री विजय सिंह भाटी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान उदयपुर के करकमलों द्वारा किया गया।

-बृजेन्द्र देव आर्य, संयोजक

स्वर्ण जयन्ती समारोह सम्पन्न

आर्य समाज रावतभाटा का स्वर्ण जयन्ती समारोह 11-12 फरवरी 2017 को सोल्लास मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान आचार्य यशवीर (गुड़गांव) भजनोपदेशक मोहित कुमार शास्त्री (बिजनौर) ने कार्यक्रम में अमृतोपदेश देकर आर्य जनों को मुग्ध कर दिया। समारोह में योग शिविर का आयोजन किया गया जिसमें वैकल्पिक चिकित्सा को प्रमुखता से लोगों ने सराहा। कार्यक्रम में जड़ी-बूटी प्रदर्शनी, वैदिक साहित्य प्रदर्शनी, शोभायात्रा विभिन्न विद्यालयों के छात्र/छात्राओं द्वारा वैदिक विचारों पर आधारित एकांकी नाटक, समूहगान, एकल भजन, बाल सम्मेलन, प्रतिभोज, सम्मान समारोह इत्यादि कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। *-ओम प्रकाश आर्य*

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 6 मार्च, 2017 से रविवार 12 मार्च, 2017

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 09/10 मार्च, 2017

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 8 मार्च, 2017

प्रथम पृष्ठ का शेष

एक विभाग की वैज्ञानिक ने जानकारी दी कि यज्ञ को खुले स्थान पर करने से अधिक लाभ होता है और यदि हम वैसे ही सामान्य धी, सामग्री व लकड़ी को अलग-अलग जलाते हैं तो कुछ लाभ नहीं मिलता बल्कि धुंआ पैदा होता है व प्रदूषण बढ़ता है जबकि इनकी मात्रा के उचित अनुपात में, वेदमन्त्रों द्वारा, यजकुण्ड में अग्नि प्रज्ज्वलित करतें हैं तो बहुत अच्छे सकारात्मक परिणाम प्राप्त होते हैं व इस का प्रभाव भी सप्ताह भर रहता है। जिन विभिन्न स्थानों पर यह प्रशिक्षण किये गये हैं वहाँ के वातावरण की जाँच में आशा से भी अधिक व चौंकाने वाले परिणाम आये, इसके लिये विभिन्न सरकारी व गैर सरकारी विभागों द्वारा भिन्न-भिन्न जाँच केन्द्रों की सहायता ली गई। डॉ ममता सक्सेना ने विभिन्न जाँच बिन्दुओं के आंकड़े भी प्रस्तुत किये। श्री विनय आर्य ने आचार्य सनत कुमार जी द्वारा किए गए विभिन्न परीक्षण परिणामों के आंकड़ों से अवगत करवाया तथा बताया कि शीघ्र ही कुछ और परीक्षण करने के पश्चात सभी आर्यजनों व जन साधारण के बीच इन जाँच बिन्दुओं के परिणामों के आंकड़े प्रदर्शित कर दिये जायेंगे। श्री विनय आर्य ने समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारियों से आग्रह किया कि वे अपने यहां होने वाले साप्ताहिक यज्ञ में प्रयोग होने वाली सामग्री, समिधा, व घी की किस्म को एक कागज पर नोट करके और यज्ञ के पश्चात् शेष रहने वाली राख को एक पैकेट में भरकर उसे सील करके दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में जमा करवा दें जिससे उन्हें भी यज्ञ अनुसंधान में प्रयोग कर उनका परिणाम भी ज्ञात किया जा सके।

यज्ञ विषय पर ही आर्य वीरांगना दल मंगोलपुरी की वीरांगनाओं द्वारा एक प्ररेणा दायक प्रस्तुति दी गई। दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलकनगर के बच्चों ने 16 सस्कारों पर सुन्दर नाटिका द्वारा सस्कारों का महत्त्व समझाया तथा आर्य समाज जनकपुरी सी 3 की आर्य वीरांगनाओं व वीरों ने महर्षि देव दयानन्द सरस्वती जी के जीवन का सुन्दर मंचन किया।

सार्वजनिक सभा की अध्यक्षता आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान, महर्षि के अनन्य भक्त, दानवीर, आर्यनेता महाशय धर्मपाल जी ने की। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. सुभाषचन्द्र, चैयरमैन व अध्यक्ष, हृदय रोग विभाग बी.एल.के हॉस्पिटल, ने कहा कि आर्यसमाज के नियमों का पालन सच्चे तरीके से करें तो हमें न केवल हृदय रोग बल्कि कैंसर जैसे अन्य रोग भी नहीं हो सकते हैं। श्री सुभाष आर्य, नेता सदन, दक्षिणी दिल्ली नगर निगम का धन्यवाद किया क्योंकि उनके अथक प्रयासों व सहयोग से विभिन्न स्थानों - पार्कों, सड़कों, गलियों व भवनों का नामकरण महर्षि देव दयानन्द सरस्वती जी के नाम पर किया गया है।

मुख्य वक्ता डॉ. छवि कृष्ण शास्त्री जी ने अपने उद्बोधन में सभी आर्यजनों को आवह्न किया कि हम सबको मिलकर एक मन वाणी व कर्म से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के लक्ष्य को पूरा करना है ताकि इस संसार का हर जीव पाखंड, कुरीतियों व द्वेष से बचते हुये सुखमय जीवन प्राप्त कर सके।

डॉ. दर्शनलाल आजाद ने महर्षि द्वारा किये जन कल्याण के कार्यों पर जोशीला कविता पाठ कर सभी उपस्थित आर्यजनों का मन मोह लिया। इस अवसर पर श्री सुरेश ग्रोवर आर्य कार्यकर्ता स्मृति पुरस्कार से श्री धर्मेन्द्र आर्य, माता छज्जिया देवी आर्य विद्वान् पुरस्कार से डॉ. सुरेन्द्र वेदालंकार, डॉ. मुमुक्षु आर्य माता विद्यावती महिला पुरस्कार से श्रीमती विद्यावती आर्य, माता रुक्मणि देवी स्मृति पुरस्कार से श्री देवेन्द्र आर्य तथा श्री राजीव आर्य स्मृति पुरस्कार से कुमारी हविषा आर्य को सम्मानित किया गया।

डॉ. स्वामी धर्मेशवरानन्द जी ने आशीर्वाद के रूप में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन पर प्रकाश डाला। डॉ. विनय विद्यालंकार ने आर्य बन्धुओं से यज्ञ को शुद्ध स्वरूप में अपनी दिनचर्या में अपनाने पर जोर दिया।

सभी दान दाताओं ने श्रद्धा भाव से यथा शक्ति सात्विक दान दिया। हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि उनके सात्विक धन में वृद्धि हो और वह हमें शुभ कार्यों हेतु प्रोत्साहित करते रहें। कार्यक्रम को सफल बनाने में जिन महानुभावों का सहयोग रहा उनमें विशेष कर सर्वश्री देवेन्द्र आर्य, वीरेन्द्र आर्य, राजेन्द्रपाल आर्य, एस. पी. सिंह, नीरज आर्य, सुभाष कोहली, अशोक कुमार, बृजेश आर्य, धर्मवीर आर्य (मोहन गार्डन) राजेन्द्र चंडोक, धर्मवीर आर्य (रानी बाग), श्रीमती वीना आर्य, कुमारी नीतू, श्रीमती नीरज मैदीरत्ता, महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल शादी खामपुर की सभी अध्यापिकाएं, गुरुकुल तिहाड़ के ब्रह्मचारी तथा मंगोलपुरी के आर्यवीर, विभिन्न आर्यसमाजों के आर्यवीर व वीरांगनाएं और जयप्रकाश शास्त्री का हार्दिक धन्यवाद करते हैं। इस कार्यक्रम में विभिन्न आर्यसमाजों के अधिकारी व सदस्यों ने पधाकर धर्म लाभ प्राप्त किया। शान्तिपाठ के साथ यह ऋषि मेला बड़े उल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ।

- *सतीश चड्ढा, महामन्त्री*

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह